विद्या - भवन बालिका विद्यापीठ, लखीसराय

वर्ग - द्वितीय विषय - हिंदी

एन.सी.ई.आर.टी पर आधारित

दिनांक - 01 - 09- 2021

हर चीज की सही जगह

सुप्रभात बच्चों ,

आज की कक्षा में आपको हर चीज की सही जगह कहानी के बारे में अध्ययन करना है, जो इस प्रकार है।

शब्दार्थ :-

स्कूल – विद्यालय मुसीबत – कष्ट, परेशानी

हैरानी – आश्चर्य

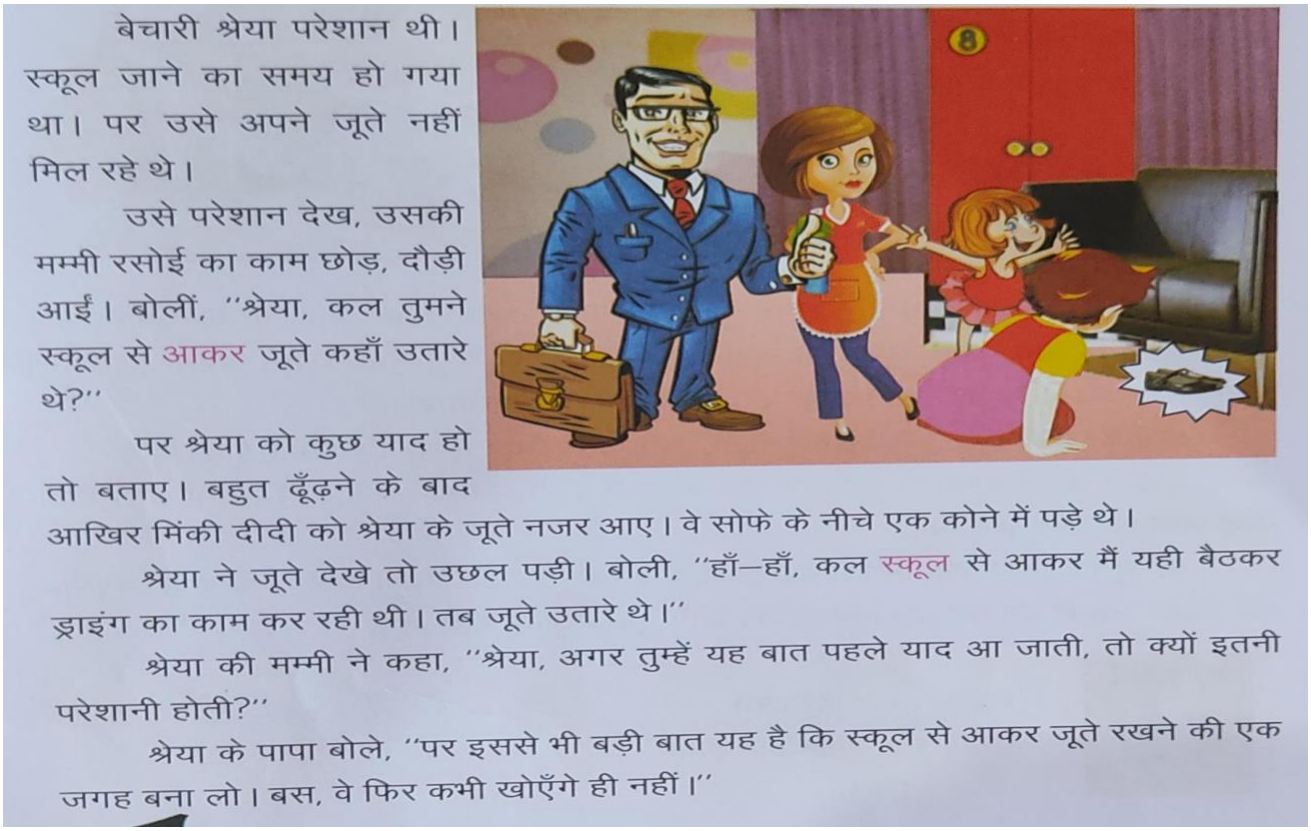

बेचारी श्रेया परेशान थी। स्कूल जाने का समय हो गया था। पर उसे अपने जूते नहीं मिल रहे थे।

उसे परेशान देख, उसकी मम्मी रसोई का काम छोड़, दौड़ी आईं। बोलीं, "श्रेया, कल तुमने स्कूल से आकर जूते कहाँ उतारे थे?"

पर श्रेया को कुछ याद हो तो बताए। बहुत ढूँढ़ने के बाद आखिर मिंकी दीदी को श्रेया के जूते नजर आए। वे सोफे के नीचे एक कोने में पड़े थे।

श्रेया ने जूते देखे तो उछल पड़ी। बोली, "हाँ–हाँ, कल स्कूल से आकर मैं यही बैठकर ड्राइंग का काम कर रही थी। तब जूते उतारे थे।"

श्रेया की मम्मी ने कहा, "श्रेया, अगर तुम्हें यह बात पहले याद आ जाती, तो क्यों इतनी परेशानी होती?"

श्रेया के पापा बोले, "पर इससे भी बड़ी बात यह है कि स्कूल से आकर जूते रखने की एक जगह बना लो। बस, वे फिर कभी खोएँगे ही नहीं।"

श्रेया सोचती है कि हाँ, मैं ऐसा ही करूँगी और रोज भूल जाती है। पर आज...! जूते न मिलते तो क्या हाल होता? आज ही मेरा हिंदी का पेपर था और आज ही यह मुसीबत।

उफ! बिना बात कितना मूड खराब हुआ। श्रेया स्कूल से घर आते–जाते सोच रही थी।

स्कूल से घर आकर श्रेया ने अपने जूते ठीक उसी जगह उतारे, जहाँ मम्मी ने कहा था। जूते उतारने के बाद उसने जुराबें भी सही जगह पर रखीं। यही नहीं, उसने अपना बस्ता भी अलमारी में सही जगह पर रखा। कपड़े उतारने के बाद तह करके रखे।

श्रेया की मम्मी हैरानी से देखकर बोलीं, "अरे वाह! श्रेया तो आज बदली हुई है।"

श्रेया ने अपनी मम्मी को मुसकराते हुए देखा तो बोली, "मम्मी, आज से मैं अपनी सारी चीजें ठीक जगह पर रखा करूँगी।"

यह सुनकर श्रेया की मम्मी ने उसको प्यार से गोद में उठा लिया। बोलीं, "हाँ श्रेया, अब तुम एक अच्छी लड़की बन गई हो। देखना, अब कभी तुम्हें परेशान नहीं होना पड़ेगा।"

गृहकार्य

दिए, गए अध्ययन सामग्री को पूरे मनोयोग से पढ़ें तथा समझने का प्रयास करेंगे-

****

ज्योति